विचार बिन्दु

हमारी आनंदपूर्ण बदकारियाँ ही हमारी उत्पीड़क चाबुक बन जाती हैं। –शेक्सपियर

प्रदूषण: चुनाव का मुद्दा क्यों न हो

देश में संसद के हेतु चुनाव होने जा रहे हैं। किसको टिकिट मिलेगा और कहां से तथा वह कौनसी राजनीतिक पार्टी का उम्मीदवार है ऐसे कई मुद्दे चुनाव में अपनी भूमिका रखते हैं। इस चुनाव में उम्मीदवार अपनी पार्टी छोड़कर अन्य पार्टी के टिकिट पर भी चुनाव लड़ रहे हैं। चुनावों में नैतिकता कहीं खो चुकी है। चुनाव आयोग से लेकर राजनीतिक पार्टी व स्वंय उम्मीदवार की निष्पक्षता पर प्रश्न चिन्ह लगाया जा रहा है। भाजपा बनाम I.N.D.I.A का बड़ा दंगल है। चुनावों की तारीखें घोषित हो चुकी हैं। देश में 97 करोड़ मतदाता हैं। जातिवाद, धर्म, गरीबी-अमीरी, लिंगभेद, बेरोजगारी आदि प्रश्न इन चुनावों में देखने को मिलेंगे। नेताओं के भाषणों ने मर्यादा की सब सीमायें तोड़ दी हैं। नेता लोग कुर्सी के लिये कुछ भी करने को तैयार हैं। देश के सामने कई समस्यायें हैं। किसानों, मजदूरों, नौकरी पेशा लोगों की व्यापारियों, विद्यार्थियों की, महिलाओं की, अमीरों की, गरीबों की, रोटी की, पीने के पानी की, इलाज की आदि की समस्याओं से देश जूझ रहा है। समाधान ढूँढने पर भी नहीं मिल रहा है। संविधान ने सबको समानता का अधिकार दिया है, समरसता व समता का अधिकार दिया है। प्रत्येक नागरिक को सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक न्याय देने की घोषणा की है। सबसे महत्वपूर्ण अधिकार जो हमें संविधान ने दिया है, वह है जीने का अधिकार। वह भी गरिमा मय होना चाहिये। जीने के अधिकार में अर्थात् गरिमा मय जीने के अधिकार में आता है, स्वस्थ्य पर्यावरण में जीना। हम हैं कि प्रतिदिन पर्यावरण को दूषित कर रहे हैं। हमारे जीवन की वर्तमान कला ने हमारे खाने, पीने का पानी और सांस तक लेने के पर्यावरण को इतना प्रदूषित व विषैला कर दिया है कि कुछ वर्षों बाद हम जिन्दा लाश बनकर रह जावेंगे। चन्द्रगुप्त मौर्य के समय की विष कन्या की तरह लोग विषैले हो जायेंगे।

गरिमा मय जीवन के लिये सबसे मुख्य वस्तु है हमारा पर्यावरण स्वस्थ्य हो। किन्तु हमारे दूषित कर्मों ने पर्यावरण को ही दूषित कर दिया है। टॉप 50 देशों में भारत एक है। भारत दुनियां का तीसरा सबसे अधिक प्रदूषित देश है। देश की राजधानी दिल्ली को दुनियां के सबसे खराब गुणवत्ता वाले शहर के रूप में जाना गया है। सबसे अधिक 50 शहरों में 42 देश हमारे भारत में हैं। दिल्ली के विज्ञान एण्ड पर्यावरण केन्द्र की रिपोर्ट 2023-24 के अनुसार भारत के सबसे अधिक प्रदूषित नगर दिल्ली एनसीआर, बेगूसराय व हनुमानगढ़ हैं। 2023-24 की सदी में 20 सबसे अधिक प्रदूषित शहरों में हैं, धौलपुर, श्रीगंगानगर व भरतपुर हैं।

दिल्ली में लगभग सभी लोग किसी न किसी रूप में प्रदूषण सम्बंधित बीमारी से पीडित हैं। चिन्ता इसी बात की है कि दिल्ली वालों की सांसों में जहर घुल रहा है। दिल्ली वाले स्वयं इसके दोषी हैं। उन्होंने इसे सरकार पर छोडा हुआ है। जबकि इस समस्या का समाधान सरकार के पास नहीं हैं अपितु जनता के पास ही है।

हमारे देश की बड़ी-2 नदियों का पानी प्रदूषित हो चुका है। गंगा भी मैली हो चुकी है। कई देशों ने नदियों का व्यक्ति (Human) का दर्जा दिया है। उत्तराखण्ड हाईकोर्ट ने गंगा व जमुना को Living Entity कहा है। न्यूजीलैंड की वांगानूई नदी को पवित्र कहा जाता है। यह माना जाता है कि 2050 तक दुनियां की 9.7 अरब की आबादी जल संकट का विकराल रूप देखेगी।

संसार में व हमारे देश ही में लाखों ऐसे लोग हैं जो दवाओं में भी मिलावट कर रहे हैं। अभी कुछ दिन पूर्व ही यह समाचार सोशल मिडिया पर देखने को मिला कि छोटे बच्चों के स्वास्थ्यवर्धक पेय पदार्थ जांच में फेल हो गये। बच्चों की अच्छी ग्रोथ के नाम पर देश में 32 हजार करोड़ का व्यापार हो रहा है और प्रतिवर्ष यह 9.89 प्रतिशत बढ़ रहा है। देश में शुद्ध पर्यावरण के नाम पर 15 प्रतिशत डिस्काउण्ट दिया जाता है और फिर भी मिलावट के केसों की संख्या बढ़ रही है। ऐसा मालूम होता है भारत में हेल्थ के नाम पर आंख बंद कर व्यापार हो रहा है। मानों भारत में हेल्थ नाम की कोई चीज नहीं है।

यूएन की Wild Life Conservation Conference (CMS-COP 14 की रिपोर्ट में जो कुछ दिनों पूर्व की आई है उसमें यह कहा गया है, "The worlds' migratory species of animal are in decline, and the global extinction risk is increasing"

संयुक्त राष्ट्र प्रमुख (जनरल सेक्रेटरी) एंटोनियो गुटेरेस ने अपनी हाल ही रिपोर्ट में स्पष्ट किया है कि धरती खतरे की कगार पर है डब्ल्यूएमओ की रिपोर्ट के अनुसार पिछले वर्ष पृथ्वी की सतह का औसत तापमान लेवल से 1.45 डिग्री सेल्सियस ज्यादा था। यद्यपि 2015 के पेरिस जलवायु समझौते के अनुसार तापमान की अधिकतम सीमा 1.5 डिग्री तय की गई है। यह रेड अलर्ट की स्थिति है। रिपोर्ट में यह व्यक्त किया है कि पिछले साल समुद्री हीटवेब ने दुनियां के एक तिहाई महासागर पर असर डाला है। ग्रेशियर पिघलने से समुद्र का जल स्तर तीव्र गति से बढ़ रहा है। यदि तापमान 1.5 डिग्री से 2.0 डिग्री तक पहुंच गया तो संसार का एक तिहाई भाग सागर में डूब जायेगा।

इलेक्ट्रॉनिक कचरा पर्यावरण की तबाही कर रहा है। नई रिपोर्ट ''ग्लोबल ई-वेस्ट मॉनिटर 2024'' में संयुक्त राष्ट्र ने चेताया है कि इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को कचरा तबाही पैदा करने जा रहा है। 2022 में संसार में लगभग 62 अरब किलो कचरा हुआ था। प्रत्येक व्यक्ति लगभग 7.8 किलो ई-कचरा उत्पन्न करता है।

2023-24 में हमने जो तापमान में उतार-चढ़ाव देखा है वह यह प्रमाणित करता है कि ग्लोबल वार्मिंग सत्य घटना है। ग्लेशियर पिघलेंगे, पहाड़ों पर झीले बन जायेंगी और फिर पिघलेंगी इससे जो बाढ़ आयेगी उसमें गांव व शहर बह जावेंगे। नई-नई बीमारियां आ रही हैं, खाने का मिठास बिगड़ गया है। शायद हम सब्जियों के नाम पर जहर खा रहे हैं। जीएम फूड ने हमारी पाचन शक्ति को ही बिगाड़ दिया है। कई देशों में में जीएम फूड के प्रोडक्शन पर रोक लगाई है हमने इस बाबत कोई निश्चित पोलिसी ही नहीं बनाई है।

ग्लोबल वार्मिंग अर्थात जलवायु परिवर्तन का बुरा असर हमारे दैनिक जीवन पर हो रहा है। भारत में सर्दी के बाद सीधे गर्मी। ऐसा लगता है बसंत ऋतु देश में थी ही नहीं जब धरती फूलों से खिल उठती थी। जलवायु परिवर्तन से अन्न जो हम खा रहे, वह भी विषैला होता जा रहा है। अन्न की कई किस्में समाप्ति पर हैं। आज गेंहू की व चावल की कई किस्में लुप्त हो चुकी हैं। कई शहरों में जहां जलवायु परिवर्तन का विपरीत असर है, वहां होने वाले बच्चों पर कुप्रभाव देखा जा रहा है। जन्म से विकृति दिखाई देती है। नई-नई बीमारियां जैसे कोरोना आदि विश्व को तबाह करती दिखाई दे रही हैं। जमीन बंजर हो रही है। विष भी नकली है।

इलेक्ट्रॉनिक कचरा पर्यावरण की तबाही कर रहा है। नई रिपोर्ट ''ग्लोबल ई-वेस्ट मॉनिटर 2024'' में संयुक्त राष्ट्र ने चेताया है कि इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को कचरा तबाही पैदा करने जा रहा है। 2022 में संसार में लगभग 62 अरब किलो कचरा हुआ था। प्रत्येक व्यक्ति लगभग 7.8 किलो ई-कचरा उत्पन्न करता है। अमीर देश, गरीब देशों को यह कचरा भेज रहे हैं। जहां कचरे को संसाधित किया जाता है। जहां हानिकारक पदार्थों के वे सम्पर्क में आते हैं। बहुत कम ई-कचरा की रिसाईकिलिंग हो पाती है। इससे बचाव के साधन नगण्य से हैं। कई कई बीमारियां आने वाली हैं। हजारों टन हानिकारक प्लास्टिक पर्यावरण में है। 45000 टन हानिकारक प्लास्टिक 58 टन पारा पर्यावरण में है जो जीवन को विषमय बना रहे हैं।

संक्षेप में धरती पर जीवन मुश्किल होने जा रहा है। मांसाहारी देश शाकाहारी हो रहे हैं और शाकाहारी मांसाहारी। मांसाहारी भोजन पकाने व पैदा करने में शाकाहारी की अपेक्षा बहुत अधिक पानी व ईंधन की आवश्यकता है। ईंधन (CO_2) पैदा करता है, जो ग्लोबल वार्मिंग का मुख्य कारण है। यदि पेरिस एग्रीमेण्ट की पालना नहीं की तो धरती के मानव रहित भी हो सकती है। पेट्रोलियम प्रोडक्ट्स (CO_2) के जनक हैं और (CO_2) ग्लोबल वार्मिंग के लिये उत्तरदायी है। कार्बन ट्रेडिंग एक चक्रव्यूह है, जिससे मानव को निकलना होगा। जलवायु परिवर्तन से बचने का एक रास्ता है कि शाकाहारी बनो और धरती माँ को बचाओ। पेरिस एग्रीमेण्ट की पालना से धरती को बचाया जा सकता है, किन्तु विकसित देश अपने कर्त्तव्य की पूरी पालना नहीं कर रहे हैं।

वर्तमान में हमारा देश चुनावों में व्यस्त रहेगा। हमेशा की भांति राजनीतिक पार्टियां यही नारा लगाती दिखाई देंगी कि गरीबी हटाओ, रोजगार दो, लोगों को रोटी, कपड़ा, मकान दो। जलवायु परिवर्तन के खतरे से कैसा बचाव किया जावे इस ओर किसी का ध्यान नहीं है। राजनीतिक पार्टियों के चुनाव मेनीफेस्टो (चुनाव घोषणा पत्र) सदा की भांति प्रकाशित होंगे। अभिव्यक्ति स्वतंत्रता का चुनावों में एक ही अर्थ है, अपने विपक्ष को गाली दो, धार्मिक होने का नाटक करो, अपने भाषणों में पूँ एजाम्प को स्थान दो, धर्म के नाम पर रोटियां सेको, रेबडी बांटो, मिथ्या प्रचार करो। किसी भी पार्टी के चुनाव मेनिफेस्टो में जलवायु परिवर्तन से विश्व को बचाने की कोई बात आज तक किसी पार्टी ने नहीं की है। 370 व 400 की बात भाजपा कर रहा है; किन्तु जिस धरती पर आप रह रहे हैं, उसे विनाश से बचाने की कोई बात न तो भाजपा व न अन्य पार्टियां ही कर रही हैं।

चुनाव इसलिये होते हैं, ताकि हम अपनी पसन्द की सरकार बनायें, जो कल्याणकारी राज्य की छवि वाली हो और संविधान के अनुरूप चलकर देश के लोगों को सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक न्याय प्रदान करे। देश के नागरिक भी मूल कर्त्तव्यों को जो संविधान के अनुच्छेद 51क में दिये हैं, उनकी पालना करते हुये संवैधानिक दायित्व को निभा सकें।

हमारे देश का पर्यावरण ही दूषित नहीं है। प्रदूषण हमारी नैतिकता में है, वाणी में है, भाई-चारे में है यहां तक हमारा खान-पान व रहन भी तथा गरिमा मय जीने का अधिकार भी प्रदूषित हो चुका है। चुनावों में हम इन सबको देख सकते हैं। चुनावों में अनैतिकता है। कालाधन, रिश्वत का पैसा, अनैतिक आय से चुनाव संचालित होते हैं। कानून ही हमें झूठ बोलने पर बाध्य करता है। एक अनुमान के अनुसार प्रत्येक प्रत्याशी औसतन 6 करोड़ रूपये खर्च करेगा, किन्तु कानून कहता है प्रत्याशी 95 लाख रूपये से ज्यादा खर्च नहीं कर सकता यह कानूनी करप्ट स्थिति है। हमारा गरिमा मय जीवन का अधिकार ही प्रदूषित हो चुका है, अत: आवश्यक है प्रत्येक राजनीतिक पार्टी अपने चुनाव घोषणा पत्र में यह घोषणा करे कि वह प्रदूषण मुक्त जीने के अधिकार के लिये चुनाव जीतने के बाद, पूरा प्रयास करेगा। मतदाता सोच समझ कर अपने प्रत्याशी को चुनें।

जय मतदाता!

–अतिथि सम्पादक,
पानाचन्द जैन,
पूर्व न्यायाधीश, राजस्थान हाई कोर्ट, जयपुर

अनंत प्रस्थान पर स्वामी स्मरणानंद

(or any other appropriate title from Editor's Desk) by Narendra Modi*

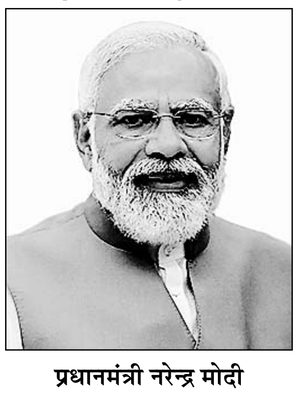

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

लोकसभा चुनाव के महापर्व की भागदौड़ के बीच एक ऐसी खबर आई, जिसने मन-मस्तिष्क में कुछ पल के लिए एक ठहराव सा ला दिया। भारत की आध्यात्मिक चेतना के प्रखर व्यक्तित्व श्रीमत स्वामी स्मरणानंद जी महाराज का समाधिस्थ होना, व्यक्तिगत क्षति जैसा है। कुछ वर्ष पहले स्वामी आत्मास्थानंद जी का महाप्रयाण और अब स्वामी स्मरणानंद का अनंत यात्रा पर प्रस्थान कितने ही लोगों को शोक संतप्त कर गया है। मेरा मन भी करोड़ों भक्तों, संत जनों और रामकृष्ण मठ एवं मिशन के अनुयायियों सा ही दुखी है।

इस महीने की शुरुआत में, अपनी बंगाल यात्रा के दौरान मैंने अस्पताल जाकर स्वामी स्मरणानंद जी के स्वास्थ्य की जानकारी ली थी। स्वामी आत्मास्थानंद जी की तरह ही, स्वामी स्मरणानंद जी ने अपना पूरा जीवन आचार्य रामकृष्ण परमहंस, माता शारदा और स्वामी विवेकानंद के विचारों के वैश्विक प्रसार को समर्पित किया। ये लेख लिखते समय मेरे मन में उनसे हुई मुलाकातें, उनसे हुई बातें, वो स्मृतियां जीवंत हो रहीं हैं।

जनवरी 2020 में बेलूर मठ में प्रवास के दौरान, मैंने स्वामी विवेकानंद जी के कमरे में बैठकर ध्यान किया था। उस यात्रा में मैंने स्वामी स्मरणानंद जी से स्वामी आत्मास्थानंद जी के बारे में काफी देर तक बात की थी।

आप जानते हैं कि रामकृष्ण मिशन और बेलूर मठ के साथ मेरा कितना आत्मीय संबंध रहा है। आध्यात्म के एक जिज्ञासू के रूप में, पांच दशक से भी ज्यादा के समय में, मैं भिन्न-भिन्न संत-महात्माओं से मिला हूं, अनेकों स्थलों पर रहा हूं।

रामकृष्ण मठ में भी मुझे आध्यात्म के लिए जीवन समर्पित करने वाले जिन संतों का परिचय प्राप्त हुआ था, उसमें स्वामी आत्मास्थानंद जी एवं स्वामी स्मरणानन्द जी जैसे व्यक्तित्व प्रमुख थे। उनके पावन विचारों और उनके ज्ञान ने मेरे मन को निरंतर संतुष्टि दी। जीवन के सबसे महत्वपूर्ण कालखंड में ऐसे ही संतों ने मुझे जन सेवा ही प्रभु सेवा का सत्य सिद्धांत सिखाया।

स्वामी आत्मास्थानंद जी एवं स्वामी स्मरणानन्द जी का जीवन, रामकृष्ण मिशन के सिद्धांत 'आत्मनो मोक्षार्थ जगद्धिताय च' का अमिट उदाहरण है।

रामकृष्ण मिशन द्वारा, शिक्षा के संवर्धन और ग्रामीण विकास के लिए किए जा रहे कार्यों से हम सभी को प्रेरणा मिलती है। रामकृष्ण मिशन, भारत की आध्यात्मिक चेतना, शैक्षिक सशक्तिकरण और मानवीय सेवा के संकल्प पर काम कर रहा है।

1978 में जब बंगाल में बाढ़ की विभिषिका आई, तो रामकृष्ण मिशन ने अपनी निस्वार्थ सेवा से सभी का हृदय जीत लिया था। मुझे याद है, 2001 में कच्छ के भूकंप के समय स्वामी आत्मास्थानंद उन सबसे पहले लोगों में से एक थे, जिन्होंने मुझे फोन करके ये कहा कि आपदा प्रबंधन के लिए रामकृष्ण मिशन से हर संभव मदद करने के लिए तैयार है। उनके निर्देशों के अनुरूप, रामकृष्ण मिशन ने भूकंप के उस संकट काल में लोगों की बहुत सहायता की। बीते वर्षों में स्वामी आत्मास्थानंद जी एवं स्वामी स्मरणानंद जी ने विभिन्न पदों पर रहते हुए सामाजिक सशक्तिकरण पर बहुत जोर दिया। जो भी लोग इन महान विभूतियों के जीवन को जानते हैं, उन्हें ये जरूर याद होगा कि आप जैसे संत मॉर्डर्न लर्निंग, स्किलिंग और नारी सशक्तिकरण के प्रति कितने गंभीर रहते थे।

स्वामी आत्मास्थानंद जी के विराट व्यक्तित्व की जिस विशिष्टता से मैं सबसे अधिक प्रभावित था, वो थी हर संस्कृति, हर परंपरा के प्रति उनका प्रेम, उनका सम्मान। इसका कारण था कि उन्होंने भारत के अलग-अलग हिस्सों में लंबा समय गुजारा था और वो लगातार भ्रमण करते थे। उन्होंने गुजरात में रहकर गुजराती बोलना सीखा। यहां तक कि मुझसे भी, वो गुजराती में ही बात करते थे।

मुझे उनकी गुजराती बहुत पसंद भी थी। भारत की विकास यात्रा के अनेक बिंदुओं पर, हमारी मातृभूमि को स्वामी आत्मास्थानंद जी, स्वामी स्मरणानंद जी जैसे अनेक संत महात्माओं का आशीर्वाद मिला है जिन्होंने हमें सामाजिक परिवर्तन की नई चेतना दी है। इन संतों ने हमें एक साथ होकर समाज के हित के लिए काम करने की दीक्षा दी है। ये सिद्धांत अब तक शाश्वत हैं और आने वाले कालखंड में यही विचार विकसित भारत और अमृत काल की संकल्प शक्ति बनेंगे।

मैं एक बार फिर, पूरे देश की ओर से ऐसी संत आत्माओं को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। मुझे विश्वास है कि रामकृष्ण मिशन से जुड़े सभी लोग उनके दिखाए मार्ग को और प्रशस्त करेंगे। ओम शांति।

नरेन्द्र मोदी,
–लेखक भारत के प्रधानमंत्री हैं

अज़ब तेरी कुदरत गज़ब तेरा खेल

प्रो. वीर बहादुर सिंह

उपरोक्त शीर्षक मैने एक पक्षी काला तीतर की जंगल/बागों में आवाजों से लिया है जिसे मैं बचपन में बहुधा सुना करता था। काला तीतर सामान्य तीतर से कुछ बड़ा, तेज आवाज में बोलने वाला और अक्सर झुरमुट में छिप कर रहता है। इसकी आवाज से ऐसा प्रतीत होता कि यह कह रहा है 'भगवान् तेरी कुदरत' अर्थात वह ईश्वर की प्रकृति की सराहना करता मालुम होता है।

इसलिए जगत में उपस्थित प्रकृति के विभिन्न आयामों पर उनके महत्वपूर्ण सूक्ष्तम गुणों और विशेषताओं के वर्णन कर पाठकों को उनसे अवगत कराना है। वैसे तो प्रकृति के बारे में जन सामान्य को कुछ तो ज्ञान जीवन में अनेक स्त्रोतों से भिन्न-भिन्न समय मिलता रहता है परन्तु उस सभी को समेट कर एक जगह करना जिससे पाठक एक बार में ही सम्पूर्ण कुदरत और उसके आश्चर्यजनक खेलों को पढ़ कर अविभूत भी हो और सराहें भी। इस जगत और उसका अपरमित ब्रह्माण्ड जिसमे हम और अन्य प्राणी व् जीवजंतु और असंख्य वनस्पति उत्पन्न, विकसित और नष्ट होते रहते हैं ऐसे ऐसे अकल्पनीय रहस्यों से युक्त है जो समझ से परे हैं। फिर भी मानव ने अपने अंतर ध्यान और अध्ययन से बहुत कुछ ज्ञात कर लिया है लेकिन अभी भी बहुत अधिक जानना शेष है। प्रकृति के रहस्य जानने का क्रम अभी जारी है।

आइये, अब इस जगत के महत्वपूर्ण गजबो पर थोड़ी-थोड़ी चर्चा करते चलें। विषय को विस्तार देने से पूर्व यह जानना भी आवश्यक है कि कुदरत अथवा प्रकृति क्या है ? इस ब्रह्माण्ड में मौजूद सभी सौर मंडलीय सदस्य और उन पर व्याप्त वातावरण और प्राणी, वनस्पति, वायु गैसें, जल, प्रकाश, बर्फ, पहाड़, नदियां व् उनके द्वारा संपन्न विभिन्न समयबद्ध क्रियाएं ही कुदरत या प्रकृति है। इस प्रकर्ति में घटित सभी क्रियाएं सभी के जीवन को नाना प्रकार से प्रभावित करती हैं जो जटिल तो हैं ही रहस्यों से भी भरी पड़ी हैं।

पहले से ही मानव ने सम्पूर्ण जीवजगत को सामान्यत: तीन श्रेणिओं में बांटा हुआ है :- नभचर, थलचर और जलचर। यह वर्गीकरण फूलप्रूफ नहीं है क्योंकि कुछ नभचर प्राणी थलचर हो सकते हैं वहीं कुछ जलचर थलचर हो सकते हैं। लेकिन वनस्पति जगत एक दूसरे में व्याप्त नहीं दीखते। इसलिए हम देखते हैं कि जो पेड़-पौधे धरती पर पनपते हैं वे जल में नहीं पनपते, इसी प्रकार जलीय वनस्पती थल पर नहीं पनपती।

सौर मंडलीय श्रेणी में सूर्य, पृथ्वी, चन्द्रमा और अन्य ग्रह, राशियां नक्षत्र आते हैं। ये सभी पिंड सौर मंडल के शून्य में एक निश्चित परिधि में सूर्य के चारो तरफ अलग-अलग दूरी पर अलग-अलग गति से चक्कर लगाते रहते हैं। प्रत्त्येक की सूर्य से और एक दूसरे से भी एक निश्चित दूरी, प्रत्येक की एक निश्चित परिधि में घूमने की गति भी भिन्न-भिन्न मगर निश्चित है। कोई किसी से टकराता नहीं कोई अपनी गति नहीं बदलता और न ही परिधि। कैसा अजूबा है किसने यह सब सेट किया?और इस सेटिंग के क्या लाभ हैं? पृथ्वी और उसके सौर मंडल के बारे में अब संक्षिप्त में महत्वपूर्ण घटकों की विवेचना करते हैं विषय काफी बड़ा है। प्रयास करता हूँ कि मैं इस सबको कैसे समेट कर लेख में प्रस्तुत करू। प्रमुख घटकों में से इस लेख में मैं सूर्य व् मुख्य ग्रह पृथ्वी, आकाश गंगा, ध्रुव तारा, सप्तऋषि मंडल, तुला और वृक्षिक राशियों के बारे में ही अभी प्रमुख बातें बताऊंगा।

1. सूर्य - इस जगत में हम जो कुछ आकाश में निहारते हैं उसमे सूर्य सबसे प्रमुख ब्रह्माण्ड का पिंड है। यह आकार में गोल सबसे बड़ा और चमकीला है। प्रकाश और ऊष्मा का मुख्य स्त्रोत है। पृथ्वी पर उपस्थित प्राणी, जीव जंतु, पक्षी, कीट, सभी ऊर्जा और प्रकाश के लिए सूर्य पर ही निर्भर हैं। सभी वनस्पतियां, पेड़-पौधे, घास आदि भी सूर्य के ताप/ऊर्जा और प्रकाश से ही उपजते और वृद्धि करते हैं। आश्चर्य की बात है कि प्रत्येक जाति, प्रजाति की जीवित रहने का समय भी निर्धारित है यह प्रोग्रामिंग आखिर कैसे बना और किसने बनाया? इतना ही नहीं सौर मंडल के अन्य ग्रह भी इस सूर्य से प्रभावित होते हैं। पृथ्वी वायुमण्डलीय परिवर्तन में भी सूर्य की मुख्य भूमिका है। यहाँ तक कि कम और अधिक दवाब के क्षेत्र बनने आंधी, तूफान और वर्षा का कारण बनते हैं।

विचार करे तो हम पाते हैं कि बिना सूर्य पृथ्वी पर प्राणी और वनस्पतिक जीवन संभव ही नहीं है। सूर्य के अतिरिक्त आकाशीय पिंडों नौ ग्रह, बारह राशियां और सत्ताईस नक्षत्र और आकाश गंगा भी है। ग्रह, राशिओं और नक्षत्रों का ज्ञान हमारे ऋषिओं ने अपने अनुभव और गणतीय ज्ञान से इनके बारे में काफी कुछ जानकारी जुटा ली, जिससे ज्योतिष का प्रादुर्भाव हुआ और सूर्य व् चंद्र ग्रहण का ठीक अनुमान तथा जन्म कुंडली के बनाने में उपयोग होने लगा। ग्रहों के नाम पर ही हमारे सप्ताह के दिनों के नाम यथा रवि, मंगल, बुध, ब्रहस्पति, शुक्र, शनि आदि रखे हैं।

उत्तर दिशा में ध्रुव तारा दृष्टिगोचर होता है। प्राचीन काल में समुद्री यात्री रात के अँधेरे में इसी ध्रुव तारे से दिशा ज्ञान कर लेते थे। ध्रुव तारे के पास सात तारा समूह का सप्तऋषि मंडल है जिनके नाम ऋषिओं के नाम पर रखे गए हैं। यह सप्तऋषि मंडल ध्रुव तारे के चारो तरफ ही बने रहते हैं केवल दिशा ही बदलते हैं दुरी नहीं। जब सब तारे पूर्व से पश्चिम चलते नज़र आते हैं सप्तऋषि मंडल क्यों नहीं?

इसी प्रकार मंगल का रंग लाल मालूम होता है वहीँ बुध नीला। ऐसा क्यों? दो अन्य राशि तुला और ब्रक्षिक के तारे समूह भी आसानी से आकाश में पहचान लिए जाते हैं। फिर वही प्रश्न कि ये समूह बिखरते क्यों नहीं? आकाश गंगा तारों का सुदूर स्थित समूह है जिसके बारे में अभी अधिक जानकारी नहीं है। चन्द्रमा वैसे तो पूर्णिमा के दिन पूरा चमकता है उसको यह चमक सूर्य से प्राप्त होती है। सवाल उठता है चन्द्रमा से परावर्तित होकर ऊष्मा पृथ्वी पर आने तक शीतल क्यों हो जाती है? सूर्य की गर्मी से तपता किसी धरातल को कुछ ऊष्मा का तो विसर्जन करना चाहिए लेकिन नहीं, चाँद शीतलता ही देता है। यह एक गजब का रहस्य है। दूसरी तरफ यदि पूर्णिमा प्रतिदिन होती तो समुद्री ज्वार रोज उठते, उस से क्या पृथ्वी उद्वेलित नहीं होती? माना जाता है कि पूर्णिमा के दिन आदमी का मन उद्विलित रहता है इसीलिये इस रात सड़क दुर्घटनाएं अधिक होती हैं। प्राणिओं के जीवन सुरक्षित रखने के लिए क्या प्रकृति ने यह व्यवस्था नहीं की?

2. समुद्र - पृथ्वी का 3/4 हिस्सा समुद्री है अथवा जल से आक्षादित है। सागर या महासागर लगभग छ: सात हैं जिनका क्षेत्रफल और गहराई अलग-अलग है। आश्चर्य होता है दवाब के क्षेत्र समुद्र के ऊपर भी बनते हैं जो पृथ्वी पर हवा, आंधी, तूफान और समुद्र में ज्वार और सुनामी का कारण बनते हैं। ऋतू परिवर्तन में समुद्री वाष्प वायु से पृथ्वी पर वर्षा का कारण बनती है। पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा के आकर्षण से समुन्द्र में ज्वार उठता है जो लौटते समय अनेक छोटी-बड़ी मछलिओं को तट पर बिखेर देता है। आजकल समुद्र में सतह से और नीचे ड्रिल करके बड़ी मात्रा में फ्यूल प्राप्त करते हैं जो शोधन के उपरांत मोटर गाडिओं आदि में काम आता है।

प्राचीन काल में नाव से लोग समुद्री यात्रा कर अन्य देशों से व्यापार करते थे, अब जंगी जहाज इस काम के लिए उपयोग होते हैं। पृथ्वी पर स्थानों की ऊंचाई समुद्री तल के संधर्व में ही मुख्य स्थानों पर लिखी भी जाती है।

3. पृथ्वी - सौर मंडल का सबसे जीवंत ग्रह पृथ्वी है इस ग्रह पर असंख्य प्राणी, जीव-जंतु, वनस्पतियां पनपती और नष्ट होती रहती हैं। पृथ्वी भी एक गोलाकार पिंड है जो सूर्य के चारो तरफ अन्य ग्रहों की भांति चक्कर काटती है, चक्कर की परिधि गोल न होकर कुछ लंबायमान या दीर्घवृत्तीय है इस परिधि में पृथ्वी की किसी समय स्थिति सूर्य के पास और कभी सूर्य से दूर होती है। जिससे पृथ्वी पर मौसम व् जलवायु में भिन्नता आती है। चूंकि सूर्य के चक्कर लगाने के समय पृथ्वी अपनी धुरी पर भी लगातार घूमती (घूर्णन) रहती है जिससे पृथ्वी पर दिन-रात होते हैं।

पृथ्वी का पिंड सूर्य तरफ कुछ (लगभग 23 डिग्री) झुका रहता है जिससे पहाड़ों पर बर्फ गिरती रहती है और जलवायु अपेक्षाकृत ठंडी रहती है। पृथ्वी पर उपजने/पैदा होने वाले जीवों और पेड़-पौधों की विविधता, सौंदर्य, विभिन्न प्रकार के रंग और उनमे विन्यास आश्चर्य में डालने वाले हैं, पाठकों को चाहिए कि प्रकृति की विविधता यथा पशु-पक्षी, कीट-पतंगे, तितलिआं, रेंगने वाले जंतु, विभिन्न किस्म की वनस्पति और उनके मोहक रंग-बिरंगे फूल, मधु मक्खिओं द्वारा पराग एकत्रित कर शहद निर्माण आदि अनेक विस्मयकारी गतिविधियान निरंतर होती रहते हैं, क्या इन पर कभी सोच-विचार आवश्यक नहीं? हम कितने स्वार्थी और कूपमंडूक हो चुके हैं, जिसने हमें बनाया उसी की अन्य कृतिओं व् कृत्यो पर विचार के लिए समय नहीं है, कैसी विडम्बना है। लेखक का निवेदन है कि घर में बच्चों, महिलाओं को कुदरत से सदैव अवगत कराते रहें और सभी से कुदरत के इन अजीबो गजब करिश्मों और प्रणालिओं पर मंथन अवश्य करें और सराहें।

काकभुशंडि महात्मा अपनी जिज्ञासा और धैर्य से अंतत: कौवे से मानव जीवन पाया और फिर अपने ज्ञान से प्रकृति के सभी जीवों को उचित मार्ग अनुसरण करने का उपदेश दिया।

विषय स्वयं में बहुत विस्तृत है मानव को शोध से कुछ जानकारी मिल चुकी है परन्तु अभी बहुत कुछ जानना शेष है। चिंतन मनन में निरंतरता से ही कुछ गुत्थियाँ सुलझ सकती हैं और बच्चों के मन में ये आश्चर्य अभी बिठा देने से बड़े होने पर वे भी अपने शोध आदि से कुछ और अधिक जान सकेंगे।

–प्रो. वीर बहादुर सिंह,
डेरी एवं खाद्य विज्ञ,
सेवानिवृत कुलपति, उदयपुर।

वायु सेना का ''गगन शक्ति'' युद्धाभ्यास एक अप्रैल से

जैसलमेर, (निसं)। भारतीय वायु सेना देश का सबसे बड़ा हवाई सैन्य अभ्यास ''गगन शक्ति'' के नाम से करेगी। इसमें देश के सभी वायु सेना स्टेशन की भागीदारी होगी। सोमवार एक अप्रैल से जैसलमेर जिले के पोकरण फील्ड फायरिंग रेंज में इस युद्धाभ्यास का आयोजन होगा।

10 दिन तक चलने वाले इस युद्धाभ्यास में वायु सेना के 10 हजार वायु सैनिक हिस्सा लेंगे। रक्षा मंत्रालय से जारी निर्देशों में बताया गया है कि भारतीय वायुसेना का देश का सबसे बड़ा सैन्य अभ्यास गगन शक्ति सोमवार एक अप्रैल से शुरू करने जा रही है। रक्षा मंत्रालय ने इस संबंध में जरूरी निर्देश जारी कर दिए हैं। इस अभ्यास के दौरान भारतीय वायुसेना के सभी हवाई अड्डे सक्रिय रहेंगे। इसमें तेजस, राफेल, सुखोई 30, जगुआर, ग्लोबमास्टर, चिनूक, अपाचे, प्रचंड सहित कई लड़ाकू विमान और हेलिकॉप्टर हिस्सा लेंगे। गगन शक्ति में उत्तरी और पश्चिमी मोर्चे को संयुक्त रूप से शामिल करते हुए अलग-अलग हिस्सों में वायु सेना अभ्यास करेगी। इसमें भारतीय वायुसेना के लड़ाकू विमान और लड़ाकू हेलिकॉप्टर अलग-अलग वायु सेना अड्डों से उड़ान भरेंगे और जैसलमेर के पोकरण फील्ड फायरिंग रेंज में बनाए गए टारगेट पर निशाना साध दुश्मन के प्रतीक चिन्ह ठिकानों को तबाह करेंगे। भारतीय वायु सेना की तमाम तैयारियों में भारतीय थल सेना साथ देगी। रक्षा मंत्रालय ने इस अभ्यास के तहत ऑपरेशनल रेल मोबिलाइजेशन प्लान को हरी झंडी दे दी है। इसके तहत करीब 10 हजार वायुसैनिकों और गोला-बारूद की पूरे देश में आवाजाही की सुविधा दी गई है।

गौरतलब है कि भारतीय वायुसेना ने 12 मार्च को जैसलमेर की पोकरण फील्ड फायरिंग रेंज में भारत शक्ति युद्धाभ्यास के तहत अपनी ताकत का प्रदर्शन किया था।

शाहपुरा में फूलडोल महोत्सव परवान पर

शाहपुरा, (निसं)। शाहपुरा में रामस्नेही संप्रदाय की मुख्य पीठ शाहपुरा में चल रहा फूलडोल महोत्सव अब परवान चढ़ रहा है। गुरुवार को चौथे दिन भी शोभायात्रा निकली।

रामशाला प्रवेश द्वार पर हुई पुष्पवर्षा शोभायात्रा सदर बाजार, कुंड गेट, बस स्टैंड होती हुई रामनिवास धाम में धर्मसभा में परिवर्तित हो गई। यहां बारादरी में चढ़ावा चढ़ाया गया और उपस्थित लोगों ने जगतगुरू आचार्य श्रीरामदयालजी महाराज से आशीर्वाद प्राप्त किया। शोभायात्रा के रामशाला के सम्मुख प्रवेश द्वार से अंदर प्रवेश करने के बाद भक्तजनों ने पुष्पवर्षा की और बारदरी में पहुंच कर अणभैवाणी का गोटकाजी को आचार्यश्री के सुपुर्द किया। महोत्सव के दौरान चहुं ओर राम नाम तारक मंत्र, सुमिरे शंकर शेष, रामचरण सांचा गुरु इन्हीं मंत्रों से संपूर्ण रामनिवास धाम परिसर गुंजायमान हो रहा है। रामस्नेही संप्रदाय के पीठाधीश्वर आचार्यश्री रामदयालजी महाराज का आगामी चार्तुमास कराने के लिए अर्जियों का वाचन आचार्यश्री के सम्मुख किया गया। फूलडोल महोत्सव के दौरान संतों की भी प्रसाद ग्रहण करने के मौके पर विशेष पंगत लगती है। बारादरी में प्रवचन के तुरंत बाद आचार्यश्री स्वयं पहुंचकर पंगत को प्रांरभ कराते हैं। अब तक भीलवाड़ा, कैथुन, जयपुर, मानवत, कैकड़ी, भीलवाड़ा व पुष्कर की अर्जियों का वाचन किया गया।

राशिफल

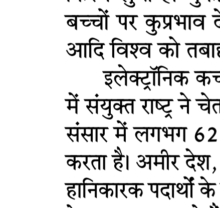

पंडित अनिल शर्मा

शुक्रवार 29 मार्च, 2024

चैत्र मास, कृष्ण पक्ष, चतुर्थी तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2080, विशाखा नक्षत्र रात्रि 8:36 तक, वज्र योग रात्रि 11:11 तक, बव करण प्रात: 7:34 तक, चन्द्रमा दिन 2:04 से वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मीन, चन्द्रमा-तुला, मंगल-कुम्भ, बुध-मीन, गुरू-मेष, शुक्र-कुम्भ, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज पुष्कर योग रात्रि 8:21 से रात्रि 8:36 तक है। सर्वार्थ सिद्धि योग रात्रि 8:21 से सूर्योदय तक है। आज गुड फ्राइडे है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर सूर्योदय से 7:56 तक, लाभ-अमृत 7:56 से 11:00 तक, शुभ 12:32 से 2:03 तक, चर 5:07 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 6:25, सूर्यास्त 6:39

मेष – अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात अष्टम चन्द्र शुभ नहीं है।

वृष – विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। स्वास्थ्य ठीक रहेगा। दिनचर्या में सुधार होगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

मिथुन – महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। परिजनों के व्यवहार के कारण दु:ख हो सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा।

कर्क – घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। दिन के मध्यान्ह पश्चात खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

सिंह – मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद समाप्त हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है।

कन्या – आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है।

तुला – व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। दिन के मध्यान्ह स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

वृश्चिक – घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। अनावश्यक धन खर्च होगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

धनु – आर्थिक/वित्तीय मामलों को आज प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। दिन के मध्यान्ह समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है।

मकर – व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

कुंभ – अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन – चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है।